सड़कवासी राम

हरीश भादानी

ये रचनाएं

रचना होता हुआ शब्द हर-हर पल के जीवन के अनुभवों से बनता एक विचार भी है। यह विचार कहीं-न-कहीं अपने वर्तमान के समानान्तर एक पूरा विकल्प है जो रचनाकार का अपना है।

आन्तरिक राग मे जुड़ा व्यक्ति का रचनाकार अपने इस विकल्प के सपने को अपने वर्तमान मे ही रूपायित करने के यत्न करता है। यत्न की इस अनवरत प्रक्रिया में ही यह विकल्प शब्द के माध्यम से व्यक्ति के रचनाकार को एक आचार-संहिता भी देता है जिसकी अर्थवत्ता को वह अपने सम्बन्धों और सम्बोधनों मे बरतता है।

इस आचार-संहिता को वह इसलिए भी सहेजता-परोटता है कि शब्द के ऐसे रचाव और रचाव के अर्थ के साथ जीने मे उसको सुख तो मिलता ही है, उसे अपने होने का सार्थक्य भी लगता है। व्यापक प्रतिकूलताओं वाले वर्तमान मे अपने छोटे से सपने जैसे विकल्प के कारण उसे अधिक ही तनाव झेलने पड़ते हैं, दवावो मे चिंपते रहना पडता है। अपनी ऐसी स्थिति में वह यह भी जान लेता है कि अपने जीने के लिए उसने जो उपकरण रचे हैं, वे उसके परिवेशगत दायित्वों के लिए बहुत ही थोड़े और छोटे हैं—परिणामतः दु.खद भी। इस दुख से लगातार तप-दगता वह इतने पर धीरज के छींटे तो अपने पर मार ही लेता है कि वह आदमी को धकेल कर आगे निकल भागने की अमानवीय होड का हिस्सा नही हैं, दूसरे से एक झूठ बोलने मे पहले स्वयं से दस झूठ बोलने की जुगुप्सा से वह बच गया। और यह भी कि सुख के छलावे को बनाए रखने को उसने अनावश्यक मुखौटे जमा नही किए हैं।

शब्द के रचना-रूप की कोई आचार-संहिता रखना प्रचलित अर्थ मे अपराध है और इसकी सजा भी। शब्द को रचना-रूप देखता रचनाकार अपने अपराध की सजा भोगता हुआ यह सुख तो ले ही लेता है कि वह विकल्प के अपने सपने के साथ इतने वड़े विपरीत वर्तमान मे जिया है।

इसका अर्थ यह कतई नहीं कि रचनाकार अपने समय की हलचल से अछूता रहा है, वह उसे जीता हुआ बहुत छोटा भी हुआ है पर रचाव के क्षणों मे उसने

अपने बौनेपन को स्वीकार किया है और चाहा भी है कि छोटा न हो। अपनी इस इच्छा के रहते, यह निर्मम सत्य है कि रचनाकार का व्यक्ति बहुत सिकुड़ा है। और पाठक ने पढ़ते हुए रचनाकार के व्यक्तित्व के हर पहलू को देखा है।

रचनाओं से पहले ये शब्द इसलिए कि इस व्यक्ति को रचने के जतन के अलावा और कुछ नही आता। और कुछ न आने के परिणामो को उसे पहनना पड़ा है। इसी पहनावे की प्रतिमूर्तिया हैं ये रचनाए।

इस किताब के पहले भाग की रचनाए तो '84-'85 की है पर दूसरे भाग की रचनाए '63 से '73 तक के महानगरी-पड़ाव की हैं। एक युग के व्यवधान के बाद शुरू हुए प्रकाशन के क्रम मे महानगरी-प्रवास के भूले-बिसरे कागज हाथ लगे, उनमे मिली अधिकाश रचनाए यहा इस जिज्ञासा के साथ रखी हैं कि विद्वान पाठक इस रचना-यात्रा की गति-स्थिति जाचे-परखे और रचने का जतन करने वाले को यह बताने की कृपा करे कि वह अपने को और किस तरह सस्कारित करे।

छबीली घाटी,
बीकानेर (राज०)

—हरीश भादानी

क्रम

अब भी ऊबड़-खाबड़…(1984-85)

तब भी यायावर…(1963-73)

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्
देवा भाग यथा पूर्वे संजानाना उपासते
समानो मन्त्रः समितिः समानी समान मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि
समानि व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति

(ऋग्वेद-१०/१९१)

साथ चलें हम
एक लक्ष्य को साध,
चिंतन से एक, सोच में एक,
ज्ञान के धनी, कर्म के धनी
जिया करते
रचते रहते हैं साथ-साथ जैसे
वैसे ही हों हम सब एक समान,
गोलबंद हों,
हम सबका संकल्पित स्वर एक
उगेरें एक राग हम
एकमना गतिशील विकासें
नये-नये आयाम
हम सब सुख के !

सड़कवासी राम !

न तेरा था कभी
न तेरा है कहीं
रास्तों-दर-रास्तों पर
पांव के छापे लगाते ओ अहेरी
खोलकर
मन के किवाड़े, सुन !
सुन कि सपनें की
किसी सम्भावना तक में नहीं
तेरा अयोध्या धाम
सड़कवासी राम !

सोच के सिरमौर
ये दसियों दसानन
और लोहे की ये लकाएं
कहां है कैद तेरी कुम्भजा
खोजता थक
बोलता ही जा भले तू
कौन देखेगा
सुनेगा कौन तुझको
ये चितेरे
आलमारी में रखें दिन
और चिमनी से निकालें शाम
सड़कवासी राम !

पोर घिस-घिस
क्या गिने चौदह बरस तू
गिन सके तो
कल्प सांसों के गिने जा
गिन कि

कितने काटकर फेंके गए हैं
एषणाओं के पहरुए
ये जटायु ही जटायु
और कोई भी नहीं
सकल्प का सौमित्र
अपनी धड़कनों के साथ
देख वामन-सी बड़ी यह जिन्दगी
कर ली गई है
इस शहर के जगलों के नाम
सड़कवासी राम !

केवल घर घरवाला खोजें

चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन
और नही कुछ
केवल घर घरवाला खोजें

इसी गरज की मार कि जमादार को
पहली चौकी दर्ज कराई
नाम-वल्दियत-उम्र कि जगल
है तो शहरीला ही—
खुली हुई ड्योढी मे आंगन
आगन के पसवाडे चूल्हा
चकले-चुडले की संगत पर
कासी की थाली पर बजती
परभाती-सझवाती पर तो रीझेंगे ही
पर···चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन
सिले होठ सी
लगी नाम की
एक-एक तख्ती के पीछे
केवल जड़े किवाडे देखें
चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन······
दीवारो-ही-दीवारो के बीहड मे भी
रस्ते धोती धूप कही तो मिल जाएगी
सूरज के आगे चदोवे ताने
चौक-गली मे रचते ही होगे कारीगर
पर···चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन

धोये हैं आकाश चिमनियां
खड़ा आदमी पच करे है
अपना होना लोहे के दड़बों मे
केवल अंधी होड़ सरीखो
भाग रही सड़को को देखें
चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन

गुमसुम के पर्वत के नीचे दब-पिच जीती
बतियाने को केवल एक बलत सुन लेने,
इतने अपनों बीच परायी एक, अकेली
दुख-दुखकर सूजी आखों मे
सारथ हों चलने की
केवल एक कौंध पा लेने
चलने का पहला
और आज का यह दिन
दिनों-दुखों की जोड भूलकर
दूरी को आजे आखों मे
एक बड़ी दुनिया हो गए शहर मे
और नही कुछ
अपनापा केवल अपनापा खोजे
चलने का पहला दिन
और आज का यह दिन

बित्ता-भर भविष्य

हमने
तय तो यह किया था
कि आंख के पानी से धोएंगे
इतिहास के
अबूझे चक्र-व्यूहो से भरी
अपने समय की स्लेट
इसलिए ही तो
हथेली-से-हथेली जोड़कर
बनाई अँजुरी
कि रोशनी भरलें
कि हमारी ही अपनी
हदें लाघने जो जन्मे इरादे
लिख सकें
अपनी जरूरत भर का आज
और...और
अपनी एषणा का कल !

भिगोकर
रोशनी मे हाथ
पाटी धोने के जतन मे ही
यह क्या हो गया
कि चेतना के
जम्बूद्वीप से फूटा कल्मषमुखी
ढाड़ें मारता
बहता ही जाए है अंधेरा
और आकण्ठ डूबे हम
बोलने के नाम
केवल छार थूके है,

हम जो चाहे देखना—
इतना तो
अब भी दिख जाए
कि आंख में
हिलकती रोशनी से
भर लेने
उठाई थी न अँजुरी, उस
उस अँजुरी की अगुलियों से
अधस रिसे है,

मर गई शायद
हमारे ही कदों को थामकर
हुमचते इरादों को
देख लेने की
हमारी हुमक,
अब सुन तो लें
ठसकीले इरादों के
चलन की धमक
हद पार जाने
आ रहे हैं · आ रहे हैं वे।
वे क्या कहेंगे···
कैसे कहेंगे ··
कैसे उतारेंगे···
भोर से उजले
उनके वदन पर लग गए जो
हमारी अगुलियों के दाग,

एक-दूजे की
आंखों में कल
क्या देखा था हमने
पानी·· या फिर
आग में भी पानी का छलावा ?
आए कहां से
अब इस सवाल का उत्तर

गूगा जंगल भर
जो रह गया है हमारा आज;

कोई···कोई दूसरा नही लिखता
किसी की भी नियति
यह सब तो
हमारे, हां हमारे सोच,
हमारे कर्म का परिणाम,
पानी जो मर गया है
अब कैसे लड-झगड ले लें
समझ के घडतियें से
पूरे भीतर को खींच बाहर
निपट आदम-सा
उघाडने वाली भाषा;

न जोड पाएंगे हम
उनसे कभी आंखें
तो आ···आ उन्हे सुनकर
हम अपना सत्य
शिव तो ले ही लें
सुनें···पावों की थपक
वे आ रहे हैं ··
हमसे ही नहीं
हमसे भी बहुत पहले
दी जाती रही
काली कामरी को
बीच मे ही फाड़कर
वे आ रहे हैं !

आ, उनके नही
अपने ही बित्ता-भर रह गए
भविष्यत के नाम
आ, चुपचाप बिछ जाएं
सडक हो जाए उनके लिए !

बर्तोल्ट ब्रेख्त के रंग-कर्म को पढ़ते हुए

चेहरों पर होती रहती
हलचल को
रचने वाला—मैं, रंग-कर्मी,
वही दिखाता हूं मैं
जो देखा करता हूं,

चेहरों-ही-चेहरों से पटी
मण्डियों में किस तरह
आदमी बेचे
और खरीदे जाते हैं
मैंने देखा है
इन्हें रचा है
दिखलाया है;

तयशुदा सोच के साथ
जा बैठा करते हैं
एक-दूसरे के घर में वे·
कभी हाथ में
मखमलिया मुग्दर या
नोटों की गड्डी थामे,
कभी सलामी देने खड़े रहें वे
कभी करें वे
इन्तजार गलियों में,
एक अंगूठी में
मलमल का थान
समा देने वाले हुशियार जुलाहे
किस तरह बुना करते हैं फंदा
एक-दूजे को फांसे रखने;

हेत से हुमके हुए
मिला करते है
बंध जाते हैं
रागो के धागो से
प्यार किया करते
किस तरह एक-दूजे को,

किस तरह पोषते है वे
दूध पिला
अपनी-अपनी बटमारी,
बिना तले वाली बावी को
भरी-भरी रखने वे
क्या-से-क्या
कितना-कितना निगला करते हैं
मैं देखा करता हूं
वही दिखाता हूं लोगो को;

मैं देखा करता हू—झरती
फूद-फफूदी ओस
बर्फ की
गिरती हुई सिलाए
धरती की छाती मे
लपलपती हहराती आगुन,
पर्वत
अंगद हुए
खड़े रास्तों पर,
नदियां
अपना पाट तोड उफनी हैं
यह देखा है, दिखलाया है;

यह भी तो देखा करता हू
मूसलधार बरफ की बरखा
टोपी पहन
करे है था-था-थैया,
आख झुकाए

बिना गिने ही
जेब भरे भूडोल
पर्वत उतरें हैं मोटर में
और दहाड़ती नदियां
कहें पुलिस से
करो ! कवायद,

हर क्षण
बुन-बुनते जाते
ऐसे-ऐसे चित्राम
देखता हूं—रचता हूं
और दिखाया करता हू लोगों को,

चेहरों पर होती रहती
हलचल को
रचने वाला—मैं रग-कर्मी !

चार अनुभव*

1

आहट किये बिना ही
जाने कौन
घर गया भीतर
मैं, केवल मैं,
मेरा ही होकर जीने की चिनगी,
सांसो के झूले झूल
हुई वह आंच
झुलस अन्तर को
लपट हो गई—

जा लगी पहले से दूजे
दूजे से दसवे
सौ लाख मनो को जा सुलगाय

वह बलबलता सोच
हुआ संकल्प
शब्द हो फूटा
हवाएं पहन-पहन अगियाया
घेर लिया
आखी दुनिया को !

2

मैं, मेरा ही भी
धधकी आगुन मे
झुलस-झुलस

जीती धरती का
पानी जला
जले फूल-पत्तियों वाले जंगल
पथराये
नदियों के पाट
घुट-घुट मरी
गूंजती हुई घाटियां
पानी की
मृग-छलना पीछे भाग
मरे मृगछौने, शावक
और कबूतर

हवा में राख
हो गई धरती बंजर
सारा का सारा आकाश धुंआया !

3

धरती के दुख से
कातर हुए
कई लोगों ने कहा
लोग-लोगों से, देखो,
मेरी, तेरी और हमारी खातिर
रचा-रचाया यह संसार
हमारे अपने हाथों
धू-धू जला जा रहा,

याद करो !
सदियों-सदियों पहले के
वे दिन
एक अकेले पानी के
दस-दस हाथों की
खा-खा मार
मरी थी धरती
सन्नाटे का

खुला हुआ जबड़ा
आवाज़ें लील गया था,

रही अनसुनी
जब-तब उठी-उठी
ऐसी आवाज़ें !

4

किंतु धरा की
करुणा का जाया जीवट
कैसे चुप रहता
रहा अनसुना,
फिर भी, बोले ही है—
यह बाहर की आग
अन्तस के आकाश, दीठ
सब कुछ को फूंक जलाए **

आओ !
रचने और रचाये रखने की
मन में
दूजी ही आग जलाए
आगुन का आगुन से
शमन करें हम
बाहर का भीतर से
इस अंधी हिंसा का।
आखों के झलमलते
उजियारे से करें सामना !

---

*. 'आईडियाज एंड एक्शन' में चंद्रलेखा के रेखांकन देखते हुए

तीसरी दुनिया की बोली

आओ, सर झुकायें
सर झुकायें
कि आदमी की एक सज्ञा
फिर मारी गयी,

आओ, सर झुकायें
इसलिए कि
सज्ञा जो मारी गयी
वह कोरा आदमी नही थी
आकाक्षा थी
जम्बूद्वीप की
वह मारी गयी,

आकांक्षा—
दोआब की माटी ने दिया
जिसे चेहरा
पठारो ने जडी
वक्ष छाती
झेलम-चिनाव ने भुजाए दी
तो हेमगर्भा थार ने दिये
चरैवेति-चरैवेति पाव
ब्रह्मा की बेटी
हो गई नसो मे दौडता लहू
पूरब हुआ आर्यं
कामाक्षा ने सवारे सौनल केश
पश्चिम का समदर
पहना गया नीलाभ चुनरी
होठो पर बैठकर हसने लगी
फूलों की घाटियां,

आई···तभी आई···
चालू कूटों के
आठ धामों में बसी
बीसों ही बोलियां
गूथ कर दी
धड़कनों की एक भाषा;

आदमी की एक सज्ञा
माटी के दियों से दिपदिपाते
द्वीप-द्वीपों से बनी
आकाश-सी
आकांक्षा को सास कर
कबूतर हो गई,

चुग-चुग उड़ते
बोलते देखा तो
हौसला हिमालय ने देकर कहा—
आ, कंचनजंगा की
मेरी हथेली पर आ बैठ
क्षण भर ठहरकर सुन
सुन कि
तू जो बोले है
यह बोली
केवल भरतो के भरत की ही नही
भूगोल पर बसी
बड़ी-सी
तीसरी दुनिया की बोली है
बोल···बोलती फिर इसे
आखे भूगोल में,

आओ, सर झुकाये
कि तीसरी दुनिया की बोली
एक बार फिर मारी गयी;

हमने देखा
इतिहास के
हर-हर पड़ाव पर देखा—
आज भी देखे ही हैं—
भूगोल पर
बैठा हुआ है बाज
सुनने-देखने की
आदत ही नहीं उस बाज की
कि तीसरी दुनिया भी उड़े
उड़ती हुई बोले..

कबूतर केवल कबूतर ही
खाने का व्यसनी
बाज ही
पहना दिया करता है
आदमी को
एक जीवित खोल—
आदमी जैसा ही आदिम,

आओ, सर उठाएं
उठाकर सर कहें कि जिसने
आदमी की एक संज्ञा—
कि जम्बूद्वीप की आकांक्षा
कि तीसरी दुनिया की बोली को
बारूद से छलनी किया
वह और कोई भी नहीं
उस रक्तजीवी बाज का रचाव—
आदिम था।
वह आदमी हर्गिज नहीं था,

आदमी तो
संज्ञाओं-आकांक्षाओं-बोलियों को
अपने मांस
अपनी मज्जा से रच-रच

सांसों से पसीने से
पोषता हुआ ही
हिंदू-सिक्ख-ईसाई--
मुसलअलअमीन होता है,

कहो कि
मारने वाला आदमी नहीं था
तब वह
हिंदू-सिक्ख भी नहीं था
बाज का जाया
वह आदिम था
वह केवल आदिम था,
उठाकर सर कहें कि
देह ने मर कर दिया है
आदमी पर आदमी की
आस्था का मोच
आदमी के वास्ते ही आदमी का धर्म
एक स्वर बोलें कि
बाज-बाजों के खपाये
न खूटी है, न खूटेगी
जम्बूद्वीप की
आकांक्षा-जीवेषणा
वह बोली है···वह बोलेगी
तीसरी दुनिया की बोली
फिर आवे भूगोल में !

जड़ भरत हम

याद है न
अंधे राज के दरबार मे
गदले सोच की
स्याही घुली थी
मामा ने थमाये थे
राज के
मरभुक्खो के हाथो कलम
देवर ने
भौजी के कपडे उतार
लिखी थी भूमिका
हुआ ही
आगे जो होना था
हुआ था न
बोलो न मोगामढियो
हुआ था न महाभारत !

हजारो साल बाद
आज
उससे भी बडा दरबार
चारो ओर
सोच के उफने पनाले
मामा ही मामा की
इत्ती बडी ब्रिगेड
थामलो कलम
मर्म भी फडकालो
ओ, रक्तबीजी देवरो
हजारो भौजियां
तुम्हारे सामने है

आओ···आओ !
झेलम के कपडे उतारे
गगा से करें जबर-ज़िन्ना
कामाक्षा पर धार मारें
वैष्णों की घाटी मे
उड़ता आचल मसोसें
गूजती हवाओ का गला दाबें
मास के गूदे को
इस तरह पीटें पसारें
कि सूफियो —
कबीरो-नानको के
होने के सपन का
बीज तक मर जाय
फिर तो हो ही जाएगा
आगे जो होना है···

आओ !
अवमर न चूको
शुभ घडी है
अठारह दिन वाले जैसी नही
कई-कई सौ दिनों वाले
दूसरे महाभारत की
पढी ही न जा सके
ऐसी भूमिका लिखदें
देश···जाति ··
धर्म का क्या । देखना है
अब तो
दुनिया को दिखायें—
भरतो के भरत
जड़भरत हम
कच्चे मांस-लोहू से भी
भर लिया करते है
अपना पेट
भूख आखिर भूख है
क़िसिम कोई हो भले !

देखें, आदमी की आंख में

आंखों में घृणा
होंठ पर चेटी लहू की भूख,
हाथ में हथियार लेकर
आदमी में से निकलता है जब
आदमी जैसा ही
मगर आदिम
तभी हो जाता है
उसका नाम कातिल
जात कातिल
और उसका धर्म—सिर्फ हत्या,

वह पहले
अपने आदमी को मार कर ही
मारता है दूसरे को,

आदिम के हाथों
आदमी की हत्या का दाग
आदिम को नहीं
आदमी की दुनिया को लगा
फिर लगा
फिर-फिर लगा है,

गोल के विज्ञान से
धर्मी हुए लोगों
लहू के गर्म छींटों से
इस बार भी
चेहरा सना हो
गोलियों ने तरेड़ी हो

मनीषा पर पड़ी
बर्फ की चट्टान तो आओ
अपने ही भीतर पडे
आदिम का बीज ही मारें
पुतलियों मे आ बैठती
घृणा की पूतना को ही छलनी करें
भीतर के पाताल को उलीच
आखो को बनाए झील
और देखें ''देखते रहे
आदमी की आख मे
अपना ही चेहरा !

फिरे न्यौते-सी

आखों मे
उतरे सपने को
खुली हथेली पर
रमसम मय
आंगन में रचू
पहनाऊ धूप
वह बोला-बोला सा लगे
राग बनू मैं
उसे उगेरू
गाए जाऊ
गूंज गीत की
आवे गाँव फिरे न्यौते-सी !

तब भी यायावर ....
(1963-73)

किसी ने तो बुना ही है

चारों ओर
सांस तक साधे पडा
सूना अंधेरा—
आकाश के
उस झुकाव तक पसरी है
काली सड़क—
दूर तक
कोई नही दिखता
चलता हुआ,
पहाड़ के माथे पर बैठी हुई
देखे है गूगी हवा
पत्ता न खड़के
पेड़ तो लोहे के खभे
चोंच तक खोले नही
कोई चिडी,

यह तो है
किसी ने तो बुना ही है
यह स्याह-सूना जाल
पर तू'''तू यहा
किसलिए ठहरा हुआ है ?
इस घने चुप मे
तू किसको खोजे है ?
किसकी प्रतीक्षा है ?
कौन आएगा, बता तो ?
सहमा हुआ
इस उझड़े दूर को
देखे ही जाए है;

यूं ठरा मन रह !
जिस आख से इसे देखे
पलक झपका कर उसे भी देख—
देखते ही
झुर-झुरा जाएगा तू,
चलने के लिए ही
उतरी है वह पूरब से,
होने का अर्थ
ठहरना होता
वह फिर क्यों उतरती,
यह तो
माटी का माधो समझ
तुझ पर हंसी है
यूं थमी-सी लगी है,

सिहर गया न,
दौड़ गया न कुछ रगों में,
नहीं है तू
माटी का माधो नहीं है,
चल…हां, चल !
आग-सी ऊभी
इस उजली किरण की
अंगुली पकड़ कर चल,

चलना तो
होने और जीने की
पहली जरूरत है
इसे तू गात-गात में पोष
घर सजेगा
घर आएगा आलाप
भर आलाप पर आलाप
गीत गूंजेगा
राग के सम-तार
नाद की धमक में

तार-तार बिखर जाएगा
यह सूत का जंजाल
वहा तक गई
इस काली सड़क पर मंडेगी
रोशनी से तर-ब-तर
तेरे पगों की छाप !

लगेगी ही पांण

कैसे थे वे
कितने थे···किसने गिने···?
आच भलकी थी
मारे के सारे बल गए
राख भर दिखी उनकी,

मठोठले हाथो
बोलते मासो की मार खा-खा
वह राख भी उड़ी
जाने कहा गई···?

वही आच आ लगे फिर
भलभलाए-फरफराए
दूधो नहाए
पूतो फले ही क्यो
माटी की ओढणी मे दुबक
हाचल चूगनी किलकारिया,
सपनो के बीज तक
फिर बाल जाए,

दूजे-तीजे बरस
आग ही है वह फिरोकड
लूटे झपट्टे मार
आख मे फिर-फिर
अलग मे सूए झोकदे
सुनम बाने-चुभाए
धरती-धरती वुझती-चुझती
मोट भी आग है वह···;

पछवा के
आडे झरोखे से झाकती
पनियल रगवाली ओ चीतरी !
देखे तो है न तू
कमल जैसी
आख की फाक से बडे
इतने बडे
सोनलिया धरा की
जूण-जीवट के
सागोपांग ये चित्राम,

हाथों की पहुच से परे
ऊचे अडाण बैठा
बडेरा आकाशिया भी
कोरी बडरी आंख से देखे
न उस फिरोकड को डपटे
न खुद उतरे, पसीजे,

परदेशण !
पछवा का तिरछा झरोखा छोड
जाएगी ही तू
किसी पर्वत की छाती से लिपट
पसर जाएगी।

जा'''जाते-जाते
यह भी देखती तो जा
पाव पीछे कर
टुरते ही उसके
पाताल के पानी की
धणियाणी की आख मे
हिलकी है झील
चुडले सजो अंजुरी मे
झार कर अखूटी धार
देने लगी है

अर्थ माटी को
प्यास आगे
लगेगी ही पांण
कल, हा कल ही तो
हुमक आयेगा फिर
हरियल टाच बिरवा ।

एक काली सड़क

खुली-खुली
धूप-जैसी
दूरी के पावो के सामने
आकर पटी है एक काली सडक
यह जानती है
पहले से काफी बडा हो गया है
ऊपर का सूर्य
और उसे तो
चलने के नाम पर
भभूकाए गए
फरनस के सामने ही तो रुकना है;
/
सूरज की सीधी आंख मे
तप-गल न छितरे
तनवा लिये हैं दोनों ओर
सीमेंट के युक्लिप्टिस और बरगद,
खुलवाए
चिमनी के धूएं की छतरी
साधे सायरन और सीटियों के
नेजे ही नेजे
पहियों ऊपर बैठ
एक-एक आवाज छेदती
भागी बस भागी जाए,

दूरिया रचने वाले
पांवो के पांव
बरोबर पहुच
झटक न दें इसे

और उसकी चाल का
हिसाब जोड़ने वाले
बढ़-बढ़ते हाथ
गेयर न बदल दें इसका,
गडवादी हैं
इस होडारू काली सड़क ने
पाव वाले
रास्तो के सामने
पीली-हरी-लाल बत्तिया ।

पूछा एक सवाल समय ने

चेहरे ऊपर
लग-लगते चेहरों को
उलटा-फाडा नही जिन्होने,
चेहरे ऊपर
पहली-दूजी-तीजी-चौथी
पुत-पुत जाती
रगो की परतो को
खण-खणते उबले पानी से
धोया नही जिन्होने,
मरे हुए शब्दो का
जीवित अर्थ
किया स्वीकार जिन्होंने
उनसे पूछा—
एक सवाल समय ने
'किसलिए जिये हो ?'
वे सारे-के-सारे
हक-हक-हकला टूटे
हो गए मलबा
समय को लेनी पडी हाथ मे झाड़ू
रास्ता खोल दिया
आनेवालों की खातिर !

तीसरी दुनिया की बोली

आओ, सर झुकायें
सर झुकायें
कि आदमी की एक नस्ल
फिर मारी गयी.

आओ, सर झुकायें
इसलिए कि
नस्ल जो मारी गयी
वह कोरा आदमी नहीं थी
आकांक्षा थी
जम्बूद्वीप की
वह मारी गयी,

आकांक्षा—
दोआब की माटी ने दिया
जिसे चेहरा
पठारों ने जड़ें
बन छाया
झेलम-चिनाब ने भुजाएं दीं
तो हिमगर्भा धार ने दिये
चरैवेति-चरैवेति पांव
गंगा की बेटी
हो गई नसों में दौड़ता लहू
पूरब हुआ आंखें
कामाख्या ने सवारे लोचन
पश्चिम का समंदर
पहना गया सीमान्त चदरी
घोड़ों पर बैठकर हमने
चूमी की चाहिया.

ये-ये मजाक

चेहरे पर
चटचटाक
बजा करती मनुहारें
और निवाले
एक पर एक
मुंह में ठुसते खीरे
मच, बलबलते खीरे
मेरी ही खातिर
भरे-भरे वे हाथ
किसी जादू में धुले हुए होते थे शायद,

क्या कहते,
किस तरह निगलते,
मुझे निवाले देने वाले चेहरे
ऐसे-ऐसे
करते रहे मजाक,
कि हंसी न आई
न आया रोना ही

पर वह···थी न
भीतर कुंडली मारे बैठी
जनम-जनम की
भूखी-प्यासी
एक बार बस एक बार भर
भीतर तक रसवती होने की
वह हुमक—
हेत का हिया खोजती
खुल खुल खुली

वह फिर भी
बलना ही था
बल-बल राख हो गई
न हो जाने की
हद तक आ पहुंची
मगर न टसकी तब भी,

मनुहार-निवालों के
ये-ये मजाक
और ठुमक का इत्ता-सा चुप !

बुना तूने : मैंने भी बुना

जीने के लिए ही तो
बुना तूने,
मैंने भी बुना जीवन,

सोच का सूता
हरकतों की खपचिया ही तो
विरासत में मिली थी
तुझ को और मुझ को,

कस-कसते रहे
बाने पर ताने
अपने-अपने
किस थाक पर जाकर रुकी
सासो-क्षणों की जोड
मुझसे तो
वाची न जा सकी वह
तूने जो पढी हो
बता देना मुझे भी

एक-सा सामान
एक-सी बुनावट से बने ये दो
देखो हो न, कितना बडा है फर्क
रगो में बुनावट मे,
एक मे आए है
चटख रग
दिप-दिपते सलमे-सितारे
महके हैं महुए-गुलाब
क्या फबे है तुझे,

और एक यह
पहने हुए हू मै जिसे
क्या है
बडे-से टाट के सिवा यह
लगे है थेगडे-ही-थेगडे
झाके है फिर भी कोचरे

सीध बताकर लौटा देना

बात एक थी
फूटी तो परभाती जैसी
महके-महके फूलों जैसी
सोधी-सोधी सांसों जैसी
जो भी थी
भरमों मे उलझी
धूप चढी तो सहमी, खीजी
बल खा-खा कड़वाई
समझाने पर,

क्या करते हम
कह दिया—खुली हुई है
मौसम की अठकोण हवेली
रहो किसी कोने मे
याद की संज्ञा होकर

क्या करें
हर मौसम से डरी
याद का यौवन लेकर
आए बिना बुलाए
कौंध-कौंध उझके गदराए
झर-झर झुर-झुर
पावों मे बिछ जाए,
हम जिस ओर
काफिला लिए जा रहे
अब तक आए
मोड-घाटियों के तट
पत्थर गडे मिले हैं

हर पत्थर पर यही खुदा था—
महके-महके फूलों जैसी
सोंधी-सोंधी एक बात को
जिसको हमने याद कहा है
मन धोना उसको
खारे पानी में
जाने-अनजाने अड़ जाए
बिछ जाए तो
सहना समझा थपकी दे
छोटी-सी सीख बता कर
लौटा देना।

आंख में आकाश

तेरी आंखों मे
फैला हुआ है
नीलगू आकाश
और पलकें...
सावली धरती को
छूते हुए क्षितिज,

हिलक-हिलक
झील जाती है जो
आखरों की पांत उनमें
किस ओर से
किस छोर तक जाकर पढ़ू
बता तू ही मुझे
तेरी कोर के
हर-हर मुहाने से तो छलके है
पीर की भागीरथी

बीजी गई उमर

हमने तो बीजी थी
एक उमर
हमने तो सींची थी सासें
आंखों को
आंगन बना दिया
बरखा की अगवानी करने
कि धरती भीगेगी
कि रिमझिम रुनन झुन झुन
कि सपने चिटकेंगे
कि सोंधी-सोंधी महक
तैरती जाएगी
थपकाती जाएगी हमको,

लेकिन
बीजी गई उमर
सूरज का पानी
पी-पीकर ही फूट पड़ी
चिटकाया दर्द
टीस पर टीस उभी
बस ' थक गईं वे

सुनो, सुग्गो के लिए
मचलती अभिलाषाओ
मरने ही मरने जन्माने का
भरम लिए जी रही उमर को
दर्दाई पलकों,
हरकारे-सी टीसों को देख-देखकर
बरखा रूठ गई है

कमजोर मनों की
रूठे अपनों की
मनुहार करें क्यों
फिर क्यों रीतें सांसें
क्यो आखें पथराएं
ओ जीवन की जिजीविषाओ
वह तो परदेसिन है
मत मांगो उसका साथ
जैसी भी है
अपनी ही है धरती
अपने मन से भिगो
बीज दो तन
चिटकेंगे सपने-ही-सपने !

फँसे दे देते

जीना बहुत जरूरी समझा
इसीलिए सारे सुख
गिरवी रख
लम्बी उम्र कर्ज में ले ली
लेकिन
जितने सपने साथ निभाने आए
हमसे भी ज्यादा
मुफलिस निकले वे
सारी नींद चुरा ले गए
जैसा भी था
भड़काऊ था दर्द मगर
हमारा था
लेकिन यादें तो बाजारू निकलीं
खुद तो नाचीं
ठेका कर-कर हमें नचाया
गली-गली बदनाम कर दिया
कई-कई आए
अपने होकर
सिर्फ सूद में ही ले लेने
आकर खिला-पिलाकर
चाटे-पोंछे गए इरादे
वे अपने थे
या थे साहूकार ?

उजियारा भी
उगे इरादों को ही पाने
उगल दिया सारी धरती को
चाट लिए पर्वती कलेजे

रोकी सब आवारा नदिया
बाध दिया सागर कोनो मे
इतना जीने याद मिले वे
सिर्फ सूद मे ही कैसे दे देते ?
कर्ज उमर का
फकत इसलिए लिया था
कागज पर लिखवाए गए
सभी समझौते तोडें
सूद चुकाने का कानून जलाएं
अपने हाथो
लिखें इबारत
जिसे हमारे बाद
जनमने वाली पीढी
अपने समय मुताबिक बाचे

इस बिंदु का यही है अर्थ

आज तक
जो भी जिया है
वह महज किस्सा नही है
और जैसा जी रहे हैं
वह कोई छलना नही है
ये बोलते हुए आखर
हमारी धडकने हैं
इन आखरों का अर्थ है
आखो की रोशनी
ये आखर
सासो से तर-बतर होकर ही
छपते हैं समय के कागजो पर

किस-किस तरह बीते
वे क्षण
क्षणो की जोड के लम्बे बरस
कैसे गिनाऊ…
एक मा की ही तरह
बहुत कष्टाने के बाद
जाया था हमने इन्हें
ये आखर
उस घडी जन्मे
जब एक और मा का
नन्हा-सा भविष्य
मजबूरियो की बर्फ खाकर मर रहा था
और मर्यादा का चौकीदार
कोठी मे बैठा

तिजारत कर रहा था
यह इतना सत्य
जितना हम तुम्हारे सामने,

ये आखर
उस घडी जन्मे
जब हम हमारे
शोर करते खून के गले मे
एक रोटी ठूस देने
बाजार मे
इन आखरो को बेचते थे,

मन के साथ
सोच की धमनियो का ताप बिन्दु
आखरो की जिन्दगी की
रेख पर आकर रुका है
इस बिन्दु का यही है अर्थ
चौकीदारो को पढाया जाय
कि भूगोल पर
परमात्मा की नही
आदमी की ही मरजाद रहनी है ।

एक हम हैं : एक तुम हो

एक हम है
जो सुबह की सुर्खियों से
प्यार करते है
एक तुम हो
जो अधेरे मे स्वयं को खोजते हो
एक हम है
सपने बुन रहे हैं धूप मे
और तुम हो
जडता लिए हो
खडहरो की ओट मे

एक यह
भले घर के
यू ही बदनाम व्यक्ति-सा
हमारा दर्द
जो चले है सीध साधो की
और एक यह तुम्हारी
आवारा हवा-सी चाह
झाकती फिरे गली-बाजार
हमने तो गुनाहो को
गगाजल समझकर ही पिया है
और तुम तो
ताजा विश्वास तक से भी
करो हो परहेज
बीमार जो हो तुम,

हमने तो
कल उगटने वाली

दिशाओं के लिए
लिखे हैं गीत
मौसम की उदासी को दिया है
राग⋯गूंजे⋯गूंजती जाए
और तुम
कांपे जा रहे हो
याद की परछाइयों से
कमजोरियों को
जिंदगी कहकर
जिये ही जा रहे हो !

वह जो

वह जो
अधियारे के हाथों का
बुना हुआ
सन्नाटा निगले,
वह जो
स्वर से स्वर को साध
रचे कोलाहल,
वह जो
ठहरावों वाले चौराहे लाघ
चले···चलता ही जाए···
धर-मजला धर-कूचा,
वह जो
बना धूप को साक्षी
देखे और दिखाए—
वो, वहा मिला आकाश धरा से,
वह जो
आस-पास को टेर हेरता
रागोली करता जाए है
वह···जीवन की गति का सारथ है !

एक बंद और

पसीना पोछिए
मलिका-ए-मुअज्जमा
गुस्ताखी मुआफ़ हो हुजूर
आटा खा लेने की ख्वाहिश में जीभ
बिना सायरन बजाए ही उलट जाती है
मेरा मतलब है
हकीमे-आजम सफाखाना-ए-हिन्दोस्तान
मर्ज आदमी का हो
या फिर जानवर का
ला-इलाज नही होता,

मैं नजूमी तो नही फिर भी जानता हू
आपको न अपनी फ़िक्र है
न अपने नूरे-चश्मो की
फिक्र है तो बस मेरी बीमारी की
और आप परेशान है, बेहद परेशान है
और यह भी कि आपके
और आपके नीम-हकीमो द्वारा
ईजाद-इस्तेमाल किया जा रहा
एक-एक नुस्खा
बेअसर साबित हो रहा है

नोच डालिए
चेहरे पर आ चिपका मलाल
कर लीजिए अपनी आखो का
लेटा हुआ पतला सा बराकट
सरका दीजिए जरा आगे
कमरे को कुल्लू बनाए रखती

मशीन की सुई

देखिए, हुजूर-आलिया की खातिर
सूरज से सीधे टाणी गई
खालिस धूप का
भापिदा बुरादा लाया हू
जिसे मैं
मखमल से भी ज़ियादा मुलायम
सोना कहा करता हू
मगर नातजुर्बेकार इसे
रेत कहकर छुटकारा पालेते है
और आवारा हवा
ऐसे ज़बरज़िना से उतार ले जाती है
मुझ पर से यह सोना
कि हिन्दी फिलिम वालों को
अपनी नाकाबिलियत के अहसास पर
दिल के दौरे पड जाते है

औरत जात हवा
और आदमी से ज़बरज़िना
भाट ए बडर...ब्रेवो. .ब्रेवो
कहा विलू-फिनम जैसे एडमेचर
और कहा इण्डिया दैट इज भारत मे
निरी वोदी नौटकिया.. तमाशे...
हवा और वह भी पछवा
इतनी बदतमीज़ है
कि मुझे दिगम्बर बनाने के बाद
बू निचोडती है
मेरा एक-एक निशान झाड
इस सोने को महज आधी बना देती है
दिल्ली तक ले उडती है
सफाई-पसद
मुस्तैद हुक्मरानो को गदला देती है
बाज़ार उलट देती है

टेलीफोन का गला टीप देती है
और-तो-और
आपकी रसोई को भी किरकिरा देती है
कुछ भी हो
मेरी नजर मे यह सोना ही है

आप आइये न कभी मेरे गाव
मगर रेल से नही
क्योंकि मेरे गांव मे से तो
रेल भी सहमी-सी गुजरती है
वजह यह कि
थरड से फस्ट कलास तक के
हर आम-खास जातरी को
अमीर बना देने की
दरियादिली का मारा मेरा यह सोना
जेब तो जेब, नाक कान आख
दिल तक में भर जाता है
जिससे रेल का वजन बढ जाता है
फिर भूरिए के बूढ़े झवरू, रातिया
सीटी सुनते ही
चारो पाव भाग
इसे चिढाने लगते है

आप तो मौसम दफ्तर से पूछकर
हवा जहाज से हो आए
आप देखेंगी
ठीक आपकी आंखो तले
सोना ही सोना लेटा है दूर-दूर तक

गरजता है महीनो गजरता है
इन्दर तक की घिघ्घी बध जाती है
दूर मे कन्नी काट जाता है साला
और साहिबा !
जब यह उफनता है क्या बयान करू

पल्टने की पल्टने खा जाता है
और डकार भी नही लेता

मगर मेरा कुनबा भी
एक ही मिसाल है
जरूरत मुताबिक इस सोने को
घर बर्तन चूल्हा बिस्तर चादर कफन
और तो और
शक्कर नमक आटा तक बना लेता है
नही बना पाता तो केवल खेत
घास न उगाए तब भी उग आती है
यही तो है ऊसर जमीन
मेरी, मेरे कुनबे की

सुना है हुजूर
दो-चार हाथो ने इस सोने के
कई-कई खेत बना लिए है
और बडी सी
नद्दी भी बना रहे हैं बरसो से
जहाज तक चला करेंगे उसमे
परसाल मर गया
मघिए का बाप कहता था
सोनल धरती फकत खेत रह जाएगी
सरकार बहादुर खाद बाटेंगी
फसल पर फसल उगेगी
खूब चरेंगे हा, खूब चरेंगे
मगर खालाजान
मेरी तो बत्तीसी भी हिलने लगी है
रेत मे नदी समदर मे खेत
और चरते रहने वाला मुह
यह सब तो
हुनर वाले ही किया करते है

ओपफओ· जुबान

फिर तालू में चिपक गई
निरा अहमक हूं न
महानगर में किस्सागोई
और वह भी आपके सामने
पर करूं भी क्या
दमाग़ तो जीभ की मुहब्बत में
मजनू-फरहाद से
बाजी मारने में लगा है
और कितनी हैरतअंगेज बात है कि
मेरी महबूबा-जीभ की
चुन्नी का पहला सिरा
मेरी ही बांबी में दुबका ससुरा पेट
वक़्तन-फ़क़्तन खेंचता रहता है
और मेरे किसी भी हश्र से बे-नियाज़
इस बिचारी को भी
नचते रहना पड़ता है
यही वजह है हुजूर
इशक-दिनौंधा मेरा दमाग
इत्ता-सा समझ लेने को भी
दुरुस्त नहीं रह पाता कि
तौल कर न बोलने का नतीजा
'आपुन तो भीतर गई
जूती खात कपार' ही हुआ करता है

मगर मैं जानता हूं
नौशेरवाने आदिल की रूह है आपमें
आपका मिज़ाज हातिमताई-सा
कलिंग की जंग के बाद
बुद्ध का चेला बने अशोक की छाया
हर घडी पहने रहती हैं आप
और पिस्तोल से फोडी गई
महात्मा जी की
'पीर पराई जाणे रे' वाली मटकी की
पवित्तर याद में आप

वैसी ही मटकिया बनाती है
मेरी तो बीसो खताए बक्सेगी

मेरा मतलब इस सोने मे बनाए गए
नफीस पाउडर से है
जिसकी एक डिबिया
आप ही के लिए लाया हू मादाम !

मलाल उतारने का कीमिया ईजाद
मै अपने कुनवे सहित
इसका इस्तेमाल करता आया हूं
बरसो से···सदियो से
विरासत है—पीढी-दर-पीढी से
पूजा है···नमाज़ है और अहम जरूरत भी
मेरी भी, लाख-लक्खो की

हमेशा-हमेशा तरोताज़ा रहे
आपकी सूरत और सीरत
पेशे-नजर है एक डिबिया
मुझे देखिये न आपके सामने हूं
अपनी बारादरी से
नुक्कड-सडक पर
ताज-अशोका के पिछवाडे
फर्राटे मे बन्द हो जाने से पहले
किसी भी काच से
किधर भी झाक लीजिये
सब जगह मैं···मेरा कुनबा दिख जायेगा

हरूफ-ब-हरूफ सच लगेगी आपको
"मैं ही मैं—यहा-वहा मैं ही मैं···"
कह गए—किसन चंदर की गीता

एक गुजारिश है हुजूर
मुझे देखें तब ऐनक जरूर उतारलें

नम्बरदार काच की दीवार
सामने आते ही
मैं रंग-बदलू ही नज़र आया करता हूं

और मेरी सीरत
मुलक के चार खूटों तक ही नही
अफरीका-अमरीका-रूस तक बरपा है
ऐसे-ऐसे चर्चे होते है कि
आपके काज़ी-पण्डित
फक्क हो जाते है विचारे
आवाज़-परूफ कमरों मे जा धंसते है
और बड़ीबी
बी बी सी वाले हाथ से
बडा आदमी होने का एक चस्का
चाट लेने की भूल मुझसे भी हो गई
मैंने उसे इण्टरभू दे दिया
और वह मागता ही क्या मुझसे
मैं देता भी क्या
उस मूरख ने भी
'ओ कलकत्ता' माड मारा
मेरा तो क्या बन-बिगड़ता
पर शहर काज़ी ने
उसके दफ़तर पर
गोडरेज लटका ही दिया
मुलक की बहुत बदनामी हुई न
मेरी झोली मे छमा डाले;

आप मुझे पहचानना चाहती है
हुज़ूर ! मैं वही हूं···वही
जिसकी बीमारी के इलाज की खातिर
इन दिनो आप निहायत ही फिक्रमन्द हैं;

मैं खास मकसद से हाज़िर हुआ हू
जरा, तफ्नियाा का हुकुम फरमादें

जानती ही हैं मादाम
साइंस ने दीवारों को कान तो दिए ही
गुफ्तगू बांधने की अक्ल भी दे दी है
किसी के खिलाफ
शोर की साज़िश करवानी हो,
शिकस्त का गुस्सा उतारना हो,
उजली चादर को कामर बनाना हो—
बटन खोलो—बजाते ही फिरो
यही हुआ न
महामहिम निक्सन साहब के साथ
'वाटर गेट'''वाटर गेट'''"
इतने परेशान हुए विचारे कि
जापानी तर्ज पर
सात दिन का सन्यास लेना पड़ा।
खैरात रोकनी पड़ी बीसियों देशों को
इसराइल-मँगीन जाता
बारूद-हवाई जहाज-सिपाही तक रोकना पड़ा
समझौते की वर्जिश में
किसिंजर साहब को
महारत हासिल करनी पड़ी
ले आए नोबल का मखमली खरीता
पर कटखने अखबार वाले
इस पर भी नहीं रीझे
पर मादाम ! निक्सन साहब भी
धुन के धनी निकले
क्या मजाल जो कोरट को टेप सौंपदें
सही तो है
राजनीति के गुर
चौबारे कैसे रखे जाए
कोरट को, जांच मांगने वालों को
सरकार, अमरीका
थोड़े चलाना पड़ता है
चीन से दोस्ताने का राज़ वे क्या जाने
अमरीकी माल को

आखो दुनिया मे सजा रखने
महामहिम को
कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं

हां-जी-हा···असल बात पर ही आता हू
कान जरा करीब सरका दीजिए न
यह कि मैंने अपनी बीमारी का
नुसखा ईजाद लिया है
यू कहूं—मुझे इल्हाम हुआ है
लिखकर तो इसलिए नही ला सका कि
ढाई आखर के अलावा
न पढ़ना आया, न ही लिखना
पण्डितों-अदीबों की
मजलिसों-दीवानखानो गया भी
पर लिखवा लाने की हिम्मत ही नही पडी
वे तो पोथियो के मलबे से दबे
बमुश्किल सास, लेते मिले
एक बीमारी के सवाल पर
सुनने पड़े हजारों ही जवाब
क्या पडता समझ के पल्ले

मुह मे लार भर बनती
ऐसे सटक जाता कि सीधे
ससुरे पेट पर जा छनकती
भीतर बज गई पायल के बहम मे, मुआ
तकाजों के कस्से ही ढील देता, तो मैं भी
हसीन जीभ के जिस्म से सटा-सटा
ख्वबगाह मे बन्द होकर बोलने लगता
ए अनारकलियो-महरुओ—
परवीनो-पद्मिनियो !
बेमिसाल माने गए अपने हुस्न को
मेरी हलवाई-छाप साबुन से धो लो
और यह लो किमख्वाबी टाट का टवाल
रगड पोछो, फिर देखो आईना
बताओ, कौन है ज़ियादा खूबसूरत

कौन है--वैसाली-आम्रपाली-नूर-ए-जहा
सुरसा सुन्दरी यह मेरी जीभ
या फिर तुम्हारा अपना थोबड़ा...
फटकार फेंको,
अपने सलीमो-शाहो-एडवर्डों पर
अहमक थे साले—महल बनाये, सिंहासन छोड़े
नगर-गाव फुकवाए—इस चेहरे की खातिर
हे ··हे···हे ··
ख्वाबगाह के कपाट
बन्द ही कहा हुए हुजूर
इसे तीरथ कहू · या फिर मौजू जुबान मे
लोग-सभा या परधान भवन का रास्ता—
तराहि माम···तराहि माम· पेश हू—
सुना है, इन दिनों आप
बद नाम की चीज से बेहद आजिज है
कभी बम्बई-महाराष्ट्र बद
अहमदाबाद-गुजरात-बगाल-राजस्थान बद
कभी दिल्ली तो
कभी पूरा हिन्दोस्ता ही बद
और बद पहन कर
जब-तब चल दिया करती भीड़···शोर···
सारा टराफिक रोक देती है
इस वजह आपके हाथो
सिलानास-उद्‌घाटन का महूरत टल जाता है
मलून, हवाई जहाज रुक जाता है
वज़ीरो की टहल-कदमी
सिकटरी साहेब का दफ्तर
धरमसी-करमसी भाई की मील
राजकपूर की 'बॉबी'
ठप्पा बाबू का छापाखाना
इनकम टैक्स का जमा-जेबखाता
कुल जमा -तरक्की-दर-तरक्की करता मुल्क ही
रुक नही—रोक दिया जाता है
और आपको भी सैकड़ो दस्तखत

जरूरी मसवरात, डिनर-जलसे
समाधि पर फूल-चढ़ाव तक छोडकर
पूछनी पडती है
अहमदाबाद-मुरादाबाद मे इतने आदमी कहा गये
किस गली निकाल ले गया
ज्योति बोम रैली
जैसी वाहियात खैरियत
आपको यह बताया ही नही जाता
कि ये बंद कोई अजूबा नही
मेरी ही बीमारी का दूसरा नाम है
उसी तरह
जैसे राजस्थान का हाड-तोड बुखार
बगाल मे डेंगू हो जाता है
दिल्ली का फ्लू, मराठी मे धनकुत
है छूत की बीमारी
गजब तो देखिये इसका कि
चारों खूंटो मे एक ही नाम रख दिया
न मराठी आडे आई
न गुजराती-बंगला-असमिया
उर्दू-कोकणी-तमिल
तेलुगु ने भी चू तक नहीं की
कितने दरद की बात है
बंद पहन कर लोग
हिन्दू-मुसलमान होना तक भूल जाते है

क्या-क्या नही किया
आपके-मेरे पुरखों ने
भावात्मक एकट के लिए
आज भी क्या नही किया जाता
मगर तब भी बेलगाव-चडीगढ को
अपनी ही थाली मे परोसे रखने
हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की तरह लडते है
हदबदी के तूमार मे

महाराष्ट्र से कर्णाटक की आबादी तक
दर-ब-दर होती रहती है
मगर एक है यह बद जिसे
सब एक नाप से पहन लेते हैं
हम-शक्ल हो जाते है
कितनी बुरी बात है
जनता जनारदन को
घरों से दफ़्तर, दफ्तरो से घर
पहुचाने की सेवा करती रेल-बसों से
लोग-बाग हाथ ताप लेते हैं
रासन की सरकारी दूकान को
अपनी रसोई मे जा रखते हैं
मोटर-सकूटर कितने महगे पड़ते हैं
खेल-ही-खेल मे कचरा बना देते हैं उनका
और-तो-और पत्थर फेंकते हैं
बेल्जियम से मंगाए काच दरका देते है
यह निरी जाहिली है
वहशीपन है···हाऽऽऽ
मुल्क को कितना बडा नुक्सान होता है

आपका फरमाना बहुत सही है
तोड-फोड वे ही करते हैं जिन्हे
ज़रूरत से ज़ियादा मिलता है
बिड़ला-टाटा तिनका भी नही तोड़ते
साहू-सिघानिया जुलूस-भीड से तो
खास परहेज करते है
क्या मिलता है इन्हे 'कुछ भी तो नही···
एक के पास फकत कलम
दूसरे के पास चूडीदार पाजामा
इनके चार-पांच करोड के चैक ही
फिरती आ जाते है
धन-धन हैं ये पचास घराने जो
साठ करोड लोगों के
अरथ-सास्तर का खटोला

खींचे ही जा रहे हैं
इनके दस-बीस हज़ारिया मुंशी
छाती पर माइका मेज बाध कर
आमद की रफ़्तार का
लगातार गिरता गिराफ़ दिखाते है इन्हे
तब भी ये फ़कत
तालाबंदी की हिचकियां खाते है
सिकटरी साहेब टेलीफून से
थाम्बा-थाम्बा की की
आक्सीजन सुघाते है
मुआवजे का मिक्स्चर पीने
और बैंक खाने की खुराक लिख जाते है
खुद मर-मर कर भी
लाखों-हज़ारों को जिंदा रखने वाले
परोपकारियों के खिलाफ
फिर भी मुर्दाबाद'''मुर्दाबाद'''मसिये'''

हद है अहसान फ़रामोशी की
आपकी रिचाओ-उपदेशो का
कितना गलत अर्थ करते हैं
बंद की छूत फैलाने वाले ये मुट्ठी-भर लोग
कह कर ही रहूगा मैंदा ही नही है
उनके खोपड़े मे सोचने-समझने का
गोबर-ही-गोबर है भीतर
आखिर करे भी क्या
अमन-आईन की पा-बदी का
जिम्मेदार खाकी सलीका
सडको पर आना ही पडता है उसे
सभता-संसकिरती के
तकाजो को बला-ए-ताक रख
बेह्या होकर नाचती भीड़ को
घरो मे ठेल देने
वजाने ही पडते हैं बास

छोडने भी पडते है पटाखे
और जो बेवड़ा पिये से
पसर जाते है रास्तो पर ही
सफेद खादी पहनानी ही पडती है उन्हे
कभी अस्पताल वाली
तो कभी सोनापुर-नीमतल्ला मार्का
घरो से नाराज लोगो को
भेजना भी पड जाता है सुधारघरो मे
यू निहायत गैरज़रूरीतौर पर भी
खाली करना पडता है खजाना
सरकार बहादुर को

खता बक्से, मादाम मोनालिसा
आपके वजीरो का अमला भी
जियादा समझदार नही
एक ओर टकसाली कागजो की
गतरस करवाता है
तो दूसरी ओर नये टैक्सो के झब्बे भी
इतने ढीले बनाता है
ज्योतिर्मय अगुलिया खोस देता है
खबरचोर फरनाडीस भी
सेंध मार जाता है
ऐरे-गैरे भी अपने नाखून पलार लेते है
फिर भद्दे कोचरो पर
आपको थेगडे लगाने पडते है
कितनी दिमागी जहमत होती है
जान की खैर पाऊ आलिया
मुझे तो आपके इन फरमाबरदारो की
कूव्वत पर ही शक है
मैं थोडा लब्बाड जरूर हो गया हू
चूकि मेरे नुस्खे का
मुझसे बहे जा रहे परनाले का
गहरा रिस्ता है इसलिए ही
तफसील से बयान करना पडता है

आपकी बड़ी किरपा कि मुझ अदना को
इतने कैरट वजन का मौका दिया

पेश्तर इसके कि मैं अपने
इल्हाम की हिजा करू "बेहतर होगा
आप अपने नाकारा लस्कर की
कुर्सियाँ बदल दें
मतलब यह कि दो-चार को
मुख़्तलिफ़ हिस्सों का चोबदार बना दें
किन्ही को सड़क-निगम, हीरा-पन्ना बोर्ड का
पानी-पहाड़ सफाई लिमिटेड का निगहबान
और इनमे भी जो
अधिक चलेबल हो, उन्हे
तेलपतियो, खिलाफत के मुरीदो
क्राति के पैगम्बरों के पास
किस्सा तोता-मैना-ए, हिन्दोस्तान
सुनाने भेज दे
ताकि फर्राट गाडी के पोपले मुह पर
पीले दूध का फीडर तो लगा रहे,
ये अरब भी निरे सनकी हैं
तेलारू थन बाधे अमरीका से कट्टी करने
और खामियाजा भुगत रहा है
सारी दीन-दुनिया।

अरे हा, आपको भी तो
राष्ट्रपति जी की हवेली से
बग्घी मगवानी पडी थी
याद ही नही आए आपको
रमझू-झुम्मन
खिडकी से ही इशारा फेक देती
खुद जुते आते
बगसीस भी नही लेते;
हा तो मैं अरज कर रहा था
आपके कई वजीर

गंडे-ताबीज पहने रहते हैं
और कुछ तो नजूमियों को
अपनी कोठी में ही रखते हैं
इस कारण असरदार भी है
बोटों से खीसे भरे रखते हैं

सियासत का एक खास गुर यह भी कि
असरदार लोगों को
बड़े तख्तों से सीधे अलग न किया जाए
सबसे पहले
गोरी चामवालों के पेशवा इन्दर ने
फिर काले नेता रावण ने
महाभारत-विभूषण कृष्ण ने
सदियों बाद चाणक्य ने
और·· फिर शाहशाह-ए-हिन्दोस्तान
जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर ने
तिजारत के बूते पर
नई सभ्यता की पेशवा बनी
लाल-गोरी, कौम के वाशिंगटन-विस्मार्क ने
पवित्र लहू वालों का ही राज बनाने के
ख्वाहिशमंद हर हिटलर ने
गए कल के हमारे आका चर्चिल ने
इस गुर को
हू-ब-हू पिया ही नहीं
बा-जरूरत तीखा-मीठा भी किया

जब-जब इनका राज
इनसे अनाथ हुआ
जनता जनारदन होकर भी
झार-झार रोई थी
जब भी याद करती है
आखें नम हो जाती हैं

इतिहास इनके दिनो को
सोना युग कहता है।

मीरा-तुलसी जैसी भगति भावी
जनता के कलेजे मे
राधा के मन में आठ बाक से समाए
रसिकलाल क्रिसन की तरह
आपकी मूरत भी फंसी रहे
इसलिए राज का दण्ड
चलाने के सारे गुर अपनी मुट्ठी मे रखिए
मतलब यह कि जिनका तन-मन
मशीन की तरह नही चलता
जिनकी अक्ल को आपके मिज़ाज की
कापी उतारनी नही आती
आप उन्हें आराम खाने को दे
जब ये दल-बदल का
खुटका ही नही बजने देते
फिर आप भी
खुरसी-खिसकाव की भनक क्यो दे

निपट नए गवरुओ का लस्कर जोडे
मगर याद रहे, नए टोले मे
निखालिस पति एक भी न हो
कोरा पति सिर्फ बीवी की सुनता है
चूल्हा-चाकी का महाभारत रमता है
सुबह-शाम दोनो लडते है
पर रात मे राजीनामा—परिणाम
चूजो ही चूजो से घर भर जाता है
इस साजिश से ही तो फेल मार गई
परिवार-नियोजन की योजना
लब्बे-लबाब यह कि आप
बहुगुणापत्तियो को ही चुनें
मसलन'''लिछमीपति-सोनापति

कोयला-हीरा-लोहा-वायपति
आदि···आदि ··
मतिपति···अजी छोडिये
कुछ नही होती अकेली मति
नही होता उसका कोई पति
वक्त ज़रूरत काम आये
इसलिए बताए देता हू
खालिस मति की डीग हाका करते
पतियो की टें बोल जाती है।
और कितनो ही की तो
फूक निकल जाने की सुर भी नही होती
चार गवाहो के लिए
घटो इन्तज़ार करना पड़ता है
बहुपति होने पर हर मक्कू
मतिपति हो जाता है
मति बुन बुलाये आती है
रखैल बनी रहती है

और श्रीमत पति भी खूब भोगते है इसे
बीसियो कड़छे-चमचे
बजते चलते हैं इनके पीछे
तालिया पीटते है—खीसें निपोरते हैं
बस ऐसे ही
खासुलखासो का अगसा
नही-नही, जीभ उलट गई हुजूर
कैबिनेट बनाये

हा, तो रात-भर चला मेरा सपना
फैक्टरी के भोपू से नही
इल्हाम हो जाने की चीख से टूटा था
इजाज़त हो तो थोडा ब्रेक मार दू
कैसा खटारा हो गया है यह शरीर कि
पेट मे तेल तो क्या
तलछट भी नही, फिर भी

मैराथन जीत आया-सा हाफे है
आपकी इनायत रहे मेरे वुजूद पर
बोलने की जुर्रत कर ही लू
आपके संदेशिये मुंशी भी निरे दब्बू है
आपसे दहशत तो खाते हैं
फिर भी आपकी मेज को
कागजो से चरमराये रखते है
दसियों-कूडी फाइलो पर
लाल अरजंट खुसाये रखते हैं
फिर भी मेरी बीमारी के
असल नाम को
आपके दीदार से महरूम रखते रहे
और आप भी बन्द ही बन्द पढकर
ताबड-तोड़ इलाज के
फरमान जारी करती रही

असल नाम से मर्ज की तासीर
समझ ली जाती तो
कई-कई नुस्खे असरदार साबित होते
खैर ''हो चुके का क्या गिला ?

मैंने देखा—खाकी सलीका
निहत्था खडा है
बास तो ऐसे फटे पडे है कि
चूजो की खातिर पतग भी न बने
पटाखो का धुआ
नीली छतरी पर जा बैठा
तमचे-दुनाले सब खाली खिट'''खिट'''

बेवडा पिये पसरे लोगो के पार
हूऽऽ हूऽऽ हूंकती वही भीड़'''वही शोर
क्या होगा हाऽऽ क्या होगा'''?
इल्हाम के चीखते ही आख खुल गई

आपके राज की, तखत ताज की
सूरत और सीरत की दुआ मागता
आ ही पहुचा आप तक
धडका जोर जो पकड गया था आप
गली-गली मोर्चा
बीच सडक बडे पत्थर···

ये लो, मैं अब तक अपनी
बीमारी का असल नाम ही नही बता पाया
देख लिया न आपने
मनचली भी ने कितना गहरे
ला पटका है दीवानगी की तलैया मे
हा तो बडी बी
मेरे बीमारी का असल नाम
सिर्फ ढाई अच्छरो का है
भूख···! हा, जी, भूख !
भूख न कुर्सी-किताब की
न सोकिया थुल-थुल शरीर की
फकत छोटे से पेट की
जिसकी पेंदी में सूराख है
सुबह डालो···शाम खाली
शाम भरो···सुबह खड-खड कनस्तर
और आपने पहली बार सुना है यह नाम
च···च···च···
अल सुबह गोरी गाय का
कच्चा दूध पीने वाले मोरारजी का
चुनाव-अलकजडर
लम्ब-दस्ती कामराज का
मान मर्दन करने वाली
गरीबी हटाव की एक बुरस से
बडो-बडो को बुहार
आसरम भेजने वाली
हे घट-घट-वासिनी ! मै ही रहा हतभागा
काश ! मैं भी लाउडसपीकरो

गगनबाणियों की घंटियाँ,
घंटे-नगारे बजा पाता···

लगन की मूंज से गला-हाथ बांध
मैं भी बैठा सो बैठा ही रहा
इतने-इतने-ऐसे-ऐसे कागद लिखे कि
"खत लिखता हू खून से
स्याही न समझना" वाला शायर भी देखले तो
मारे शर्म के ज़मी-दोज़ हो जाये शाला
आदमी जब सोया हुआ जाता है
वही लौट कर नही आता
पर आपके सुराज मे
सोया हुआ जाता कागद
ठौर-ठिकाना न मिलने पर
व-ज़रिये डैड लैटर दफ़्तर
मुलाने वाले तक लौटा ही दिया जाता है

देवी मरियम ! कैसे कोसू अपने खोटपन को
गली के नुक्कड़ तक नही झांका
एक भी डाकिया आज तक
कसम पवित्तर विधान की,
एभरेस्ट के माथे से
लंका तक गए समंदर की एडी
पाकिस्तान वाले छोर से
चीन-बरमा-नेपाल-बंगलादेश वाले
छोर तक के खलक मे फैले
अपने कुनबे से
वैसे के वैसे एक ही मज़मून के
हज़ार-हज़ार खत लिखवाए
यकीन कीजिये
जवाब का ज तक नही देख सकी ये आखें
ता हम भी आपके इत्ते बडे चुप को
"मेरा—मेरे ही वास्ते—मेरे ही द्वारा"
पाव धोक सर नवाया

आपके जज्बात, आपके अदल-आईन पर
शक शुबह' न किया, न करने दिया

हीरा-पन्ना न ठहरे
न उठा सके सोनाकम्मी, पर अंदाज़े
खूब पकड़ती हैं मेरी अगुलियां—
खत पहुचे ही नही होगे
बाचे भी न जा सके होगे
मायना ही नही बना होगा हालात का
और मूजी वक्त भी तो
चौबीस घटो का दिन-रात बनाता है
ध्रुव बना रहा मैं
आप की आखो के आगे
अपने भरम उघाड देने
तप का ही फल मिला कि
दमाग मे झरोखा निकल आया—
गलो मे पदमसिरी
पदमभूषण लटकाने कभी-कभार आप
फिलम तो देखती ही होगी
बस जा पहुँचा
राजकपूर जी-मनोज की चौखट पर
क्या गले लगकर पिघले हैं
मेरे असल फोटुओं को मिटों क्या
घंटों चलवा—चुलवाया
मुझे परदेसी तक जान गया
और अपना देस तो
हर घडी होठों पर रखे फडफडाता फिरा
पर उन कमाल-उल-कमालो ने भी
यू घोला अपना कमाल कि
सेठ ठन्नामल दलालचंद से
बाबू फोतदार फकीरे कुली तक को
सिरमट का बाध
बने रहना पडा तब तक
मेरे लिए वहा

खून-पसीने का उनका दरिया
पलट कर उन्हीं के खास
कमरों-खातों में नहीं जम गया जब तक,

नत्थू बाबा से छापा सुना, तब जाना
आप फिलम तो देखती ही नहीं
फिर भला आप कैसे देखें-पहचानें मुझे
पांव धोक ! वो भगत खोटा जो
भगवान को रिझाने से पहले पूजा छोड़े
यह नहीं तो वह, वह नहीं तो यह
आप तस्वीरें तो देखती ही हैं
बड़ों-बड़ों की बड़ी-बड़ी तस्वीरें लटकाते
मैंने आपका फोटू भी देखा है
अमरफल पकड़े जा पहुँचता हूँ
खंडहरात रच्छा विभाग को सी
एक अदना मिलकियत के सामने
मेरे जैसा ही—सन्नू: यही काबिज है
वही माजा···वही कसाव
पर उसने होले-होले
हंसते रहने का व्यसन पाल रखा है
और मैं—बड-बड-भोंपू जी का खास चेला
फिर खूब पटती है हम दोनों में

आप को भूख की यानि कि मेरी
अर्थात आदमी की तस्वीर
भेजने की बात पर
वह यूं हंस देता है जैसे मेरे मुन्नू ने
दूध के वहम में अपने पर
सुबह की धूप बखेरली हो
मुझे उसे और उसको मुझे
घूरते रहने पर लगता है—
आदमी सोया हुआ ज्वालामुखी है वहरहाल
जिसमें से धुआं-राख
निकलती है कभी-कभार

कभी भी भभूक जाने
दूर-दूर तक लावा बह जाने के खतरे
कहीं गहरे   बडा-सा अलाव
होना तो साबित करते ही हैं
इस खयाल को वह··
हकीकतन बरतने लगता है······
कभी जीभ के तसले पर
तो कभी मुंह में कूडे में
बुरस डुबो कर
टीन-रबड-लकडी-कागज
टाट पर पोछता ही रहता है
आखों-हाथों की निगहबानी में दौडता
रग·· पानी···रग···

और एक चौखट के आगे
धकिया देती हैं मुझे उसकी आखे
बीचो बीच सुर्ख लहू···
आग ··राख···पिसा-पसरा कोयला
नेजे से छेद दिया गया हाथ
और सब कुछ के पार
लाघ जाने पर आमादा आख
पूरा भूगोल ! ब्रह्मांड ! पेट !
पेट का भीतर उघाडती भूख !
इस सबमें झाकता चेहरा ! हां चेहरा !
हू-ब-हू मैं···मन्नू···आदमी···!

तीसरी पीढी में
आख-मिचौनी खेलती है दादी अम्मा !
हकीकत के रू-ब-रू होकर भी
जैसा बन जाना चाहिए, नहीं बन पाता
और बनता भी हू तो
महज एक शेखचिल्ली—
आप तस्वीर देखती है
कलेजा फट जाता है

लहू छन आता है चेहरे पर
और आखे—कस झलता झरना
एक बद मुट्ठी दूसरी से लिखवाती है —

कही भी न लटका करे
अलीगढ-गोदरेज के ताले
उखाड दी जाए बैंको-गोदामों पर लगी
अदर आने की मनाही की तख्तिया
कल्लू फोरमैन ही होगा सुबह से
धरमसी मिल का रोकडिया
जमाखाता सम्हालेगा
बनियान से हवा खाता राम मास्टर
कब्जा दे दिया जाए
फुटपाथियो को किल्लो-सरायो का
मुल्क का होना-समझना बाद मे ही सही
अपना दडबा-चूल्हा तो
पहले समझले

सम्मू अपनी हल्की सी हँसी से ही
'कैसे' का छीका गिरा देता है
इत्ती बडी तस्वीर
भेजने की बिसात बसाने
एक-दूजे पर दीदे फाडे
बस फाड़े ही रह जाते है
छाती नो कैसे कहू
हाडों के फलैट चौपडे के नीचे
लुब-डुब करते लोथडे मे
भोथरी छुरी-सी फिरी लगी
कर ही गई साली
भूख का बरमाड…बरमाड के-रंग ''
और हर रंग मे मै ही मैं—मैं ही मै—
आप को दिखाने की
मेरी हसरत की हत्या

हाऽऽ हाऽऽ इतने बडे मुल्क मे
रोज सौ-पचास हत्याए होती है
तार-बेतार भागती खबरे भी
आप तक नही पहुच पाती
फिर हसरत-हसरतों की हत्याओ की बू
कौन पावो पहुचे आप तक
रोज-रोज की हत्याओ से
और तो कुछ न हो भले
बात कडवी तो है, पर सौ टच सच
बीस तोला राशन, दो गज कपड़ा तो
बच ही जाता है
और यू परिवार-नियोजन
पहली जमात तो पास हो ही जाता है
जान की खैर पाऊ आलिया
मेरे अल्फाज़ को शिकायत नही
खबरदारी भर माने—

यह कि आपके साथे मे सरसब्ज़
डाक दफ्तर बहुत गैर ईमानदार है
आपके परति कतई वफादार नही
और जो दूरदेशी पर झपट्टा मार कहू तो
यह कि इसके थैलो मे ही
छिपी हुई है बगावत बू
वरना यह हो ही कैसे
कि लिखे तो खत आपको
और पहुँच गए
हगामा रेकाने वालो के पास
ऐ अमनो ईमान की देवी
कैसे शातिर हैं ये लोग
मामूली से मजमून का
इतना बड़ा ज़खीरा बना लिया कि
उसमे से जब चाहे
जुलूस निकाल लेते हैं
नारे उगलवा देते हैं

घेराव माड लेते है
ममोरेडा·· चारजसीट·· चक्काजाम···
जाने क्या-क्या बनाते रहते है

मुझे पूरा यकीन हैं
आप अपनी बडरी अखियो पर
नच्छतर खोजने वाली दूरबीन चढा कर
खूब जतन करती है देखने का
पर इतने-इतने दबावो के नीचे
आप तो क्या कोई भी क्या देखे मुझे,
मै अरज कर रहा था
मेरा सपना टूटा था चीख के साथ
कौंधा था—इल्हाम ! नुस्खा !
यह कि·· अरे-अरे···अरे···
आपने तो फौज-फाटा बुलवा लिया
पर हे अफ्रोदिती ! हे सिंह-सवारनी !
आप और फौज
दोनों ही शहर मे रहे तो देश के
दो-दो पिछवाडे कौन सम्हालेगा···?
सर झटक कर याद करिये···
कितनी बार
सेंध मार गए है मुए पडौसी !

कुरसी-खडाऊ छोडकर
ईडन-गार्डन, आजाद मैदान, शहीद चौक,
मोहल्ला भिस्तियान मे
छत्रीली घाटी तक मे "खतरा है···
सावधान रहो···अंधेरा रखो···
एका रखो···खाइयाँ खोदो···
बाहर न आ सको पर उनमे कूदकर
लेटने का अभ्यास करो
रोटी ··पानी···लहू···सत्र चदे मे दे दो···"
जैसी अलख जगानी पडी थी
आपके मछंदर-गोरखनाथो को

और आपा !
आपके मरहूम वालिद साहब की
आखो से तो गरम पानी का
झरना ही फूट पडा था
जब कोयल लता मगेशकर ने
"ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा
आख मे भर लो पानी !" गाया था
वह दिन कि आज दिन तक
हजार-हजार लोग हिचके है

शहर मे फौज ज्यादा दिन रहे तो
नाजुक तबीयत
आबरू का खतरा सूघने लगती है
मेरी धन्नो-रधिया की तो आबरू ही क्या
निगोडी टाट बाधे ही घूमे
जिसकी बगल मे डण्डा हो
वही टाट खीचदे
या फिर थाली मे कुछ भी गिरवा लेने
खुद ही जा नाचे चौराहे
हुजूर ! आबरू तो
घरवालो-जरदारो-हयादारो की
उनका ही खयाल करिये
यह जो फौज है न
जनतन्तर का अ आ भी नही जानती

ठीक है, लोग-सभा मे आपने
अपने और हगामियो के दरमियान
हमिया-कोपल भी रखली है
मगर आप पर
हमला करने वाले भी कौन कम है···
अटलू-पीलू-माटी-माधो तो
ताक टापे ही रहते हैं
जाने कब हल्ला बोलदें
दरमियान की हमिया-कोपल ही

या फिर पीछे से ही धक्का मार दे

गगा-गोबर-भाठे-भोपे मुमरू
ये हादसे फौज-फांटे को कभी न दिखें
क्या भरोसा
आपकी खैरख्वाही के नाम पर ही
आपका तखत सरकाले
आप तो जानती ही हैं
मिलटरी के दमाग पर लोहे का टोपा रहता है
और शरीर एकदम अटनशन
इसकी पोथी मे
न अगर होता है, न ही मगर
दो हरफ बोलती है···दो ही सुनती है···
मार्च···! फायर···! फायर··· मार्च ··!
मेरी अरज मानें—इसे तो
पहाड़ो, अण्डमानो-निकोबारों या फिर
सोनल धोरो पर रहने भेज दे
फायदा आप ही के पलडे रहेगा,

हा तो मेरी चीख में
गौतम-बुधवाला जो बोध कौंधा था
उसे अच्छरो मे जोडा तो
भूख के ढाई अच्छरो के मुकाबिले
सिर्फ चार हरफो का 'पेट बन्द' बना
एक सलवट को भी
पेशानी पर पसरने की इजाजत न दे
यह पेट बन्द न सूफियाना है
न रजनीशियाना कि
किसी सनद-याफ्ता विद्वान् से
तर्जुमा करवाकर समझना पडे
ठीक है ब-मुजब कायदे
पहले बिल् प्रिंट ही बनाया जाना चाहिए
पर मादाम ! यह तो है ही
चौथाई सफे के चौथे हिस्से जितना

इसलिए हुनरमन्द या तकनीक
मागने-मगाने की जरूरत भी नही
दवा ही तो बननी है
कोई चण्डीगढ तो नही कि
कारबूजिये के पुनरजनम की खातिर
आपको मन्नत मागनी पडे

आप भी कितनी नरमदिल हकीम है
जो दवा तो दवा
जायका तक मीठा बनाने पर चौकस हैं
अब यह उन पर छोडिये
दी जानी है जिन्हे यह दवा
देखियेगा आप— इधर इस्तेमाल
उधर तुरता-फुरत असर··
सो आप मसालो के माप-तोल
और जायके के लिए
ऑबराय-शेराटन मे करम फरमा
विश्वविख्यात हिन्दुस्तानी रसोइये
हसराज कपोतरा को
ब-लस्कर साजो-सामान
न्यौत लेने का कतई न सोचे
कहा दुनिया भर के
बे-मिसाल रसोईघरो का सिरीपूज
और कहां दो ईंटो के चूल्हे के बिरह मे
कलप-कलप कर
मरीज भर रह गया मैं· 'मेरा कुनबा
और दो पुडिया दवा ही तो···।

भाप हो जाने तक उबाली जा रही
सबको बरोबर रखने की माग से
मेरे कान तो कभी के खिर चुके
आपके कानो की खैर चाहू
इस माग को उबालकर
भाप बना देने की होड़ मे

तर-ब-तर हो रहे हैं मुल्क के मुल्क
ख़ातिर जमा रखें
हमारा देश कई मायनों में
रूस-चीन अमरीका से भी बहुत आगे है—

मसलन ''आप हकीमे-आज़म तो हैं ही
वज़ीरे-आज़म भी हैं
और फ़क़त हुकूमत के लिए बनी
सियासी जमात की
आप ही हैं एक मात्र वली
धन-धरम-राज के घोड़े
बा-अदब झुके रहते हैं आपके आगे कि
आप ही थामे रासें
सरपटाती जाएं इन्हें
जबकि इतने-इतने मुख
वयोविरघ जनतंतर
अमरीका तक में नहीं
वहां तो फ़क़त राष्ट्रपति होना है,

आपके राज में तिरंगे के नीचे
सब एक रंग हैं
मिक्सचर आपको पसंद ही नहीं
जबकि अमरीका में सख्त लछमण रेखा है
एक ओर गोरे : दूजी तरफ़ काले
काला आदमी
महामहिम बन ही नहीं सकता वहां
चीन में एक कलम के चलते ही
चलना हो जाता है सबका
पर आपके तो हर सूबेदार को
कलम-आख-हाथ-पांव—
हथियार तक चलाने की छूट है
और रूस में तो
खीने-पीने-बोलने पर भी बंदिश है
एक आप ही हैं कि

आटा-नमक-प्याज
सोच-समझ कर खाने की
खास हिदायत के अलावा
सिरमट-लोहा-तेल-घासलेट—
कपडा-लकडी-टाट-घास
अमरत-जहर- कफन तक खाते रहने की
पूरी आजादी दे रखी है
मै तक बोल लेता हू
जज्बात के बूते पर लोगो को
बरगलाने वाले झडाबरदार तो
क्या-क्या नही बोल जाते,

सुना है. आप कानो मे
खास किसिम का तेल डालती है
एक फोहा मुझे भी मिल जाता,
अब कोई खाए—बोले ही नही तो आप
जबरन ठूस कर
किसी के बुनियादी हको का हनन कैसे करे ?
सौ टका शुद्ध है
हमारा भारतीय जनततर
बताए कोई, कही इसकी नकल,
मेरी अरज है कि अब
बैंक क्राति'''हरी क्राति' आदि-आदि के बाद
बस, एक क्राति और करवादें—
नुस्खा बनाने का जिम्मा
फकत गबरू कम्पोटरो को दें
मेरा मतलब—छोटे मतरियो से है
दरियादिली मे आकर
मजूर-कारीगर रख लिए तो
दवा बनाते-बनाते ही
धुआँ उगलने लगेंगे सास नली से
आप तो जानती ही हैं
जहा भी होता है धुआं
देर-सबेर आग भड़क ही जाती है,

फिर आपको फायरबिगेड भेजना पड़ेगा
पहले से ही पाल बांधलें

हे धनवंतरी की आसीसधारिणी !
हे चरक-गादिनी !
अपने सरजनों-हाड-वैदों को
नुस्खे की इबारत थमाते बखत
खास हिदायत दें कि हर खूराक
राई-ब-राई-सूत-ब-सूत
दी जारही तफसील मुजब बने
जिसकी पैदावार इफरात से होगी
जो ज़ियाद : इस्तेमाल करेगा
दिया जा रहा रोगी रजिस्टर
मय भर्ती-डिस्चार्ज तक के सारे खानों को
ठूस-ठूसकर भरेगा
उसी की तरक्की होगी

अलीजाबेथ पहली और विक्टूरिया ने तो
ठेकेदारी विध से
समराटिन होकर भी
लाख-लक्खो की भीड़ मे
सर'''नाइट'''रायबहादुरो के
दो-चार सौ ही फुग्गे फुलाए
इतना गहरा फर्क रखने पर भी
यार लोग उनके जमाने पर
सोने का पतरा ठोक गए
फिर आपको तो
जनता जनार्दन ने ही बनाया है
दुनिया की सबसे बड़ी जम्हूरियत की
इतनी ऊची लाट कि।
अशोक के खंभे ने
अपने तीनो जबडे सी लिए हैं
कोपखाना हो गई है कुतुबमीनार
और पीसा की परदेसिन तो

आपकी झलक की फटक से ही टेढी हो गई हैं

वोटो की कीलो से ठुकी
है कुर्सी-नशीना !
दवा बनाने-बाटने जैसे
निरे मामूली काम की खातिर
आपने तो ऊचो-ऊचो को नीचे उतार लिया है
गलोब जिती बडी मिसाल !
पेट-कोटिये मेगस्थनीजो—
फाह्यानो को तो पसीना ही आएगा
पर असल पगारी शहद चाटू
सम्पादक-लेखक तो
इस मिसाल को
किताब तो किताब
मेरी छाती-कपार तक छाप मारेगे
पूरी की पूरी कतार ताक मे है
इतिहास-हिलाऊ कडछो की,

दूध से दही न जमा पाए भले
कागज तो जमा ही लेंगे
बिलो-बिलोकर निकाल ही लाएगे
आपके नाम का टनो मक्खन
बाद तक की की पीढिया खाती रहे
खाने की एक और चीज को
दूर से देखा करता मैं
अपनी ही लार चाटते थक जाऊगा,

वरदान मे मिले अमरफल सी
दवा खाने के तुरत बाद
गगुओ-तेलियों-झुम्मनो की
जमात के हिन्दुस्तान को
हाजमे की डकार तो लेनी ही पडेगी
कि उसने 'धन-धरम-राज' की
साच्छात तीन मूरती के

हाथों से बनी दवा खाई है,

फारमूला इतना सस्ता-सुन्दर-टिकाऊ है कि
असली सिलाजीत बेचने वाला
सड़काऊ-सरजन तक घाटा खा जाए···
बस जी, बस दो मिनट और···
करमयोगिनी जी !
फकत आपकी खातिर पेटंट रखे
पेट बंद के बिलू प्रिंट का
खुलासा इतना ही कि अपने
लवाजमे को दो हिस्सों मे बाटे
एक को तीखी नोक वाला
सूआ और डोरी
(डोरी नायलॉन की पक्की रहेगी)
और दूसरे हिस्से को
सूराख करने वाला वरमा
उत्पादन और इस्तेमाल
दोनों जगी पैमाने पर हो
सूआ-डोर वाला कसकर सिया करे
वरमे वाला, सूराख करता जाए—आर-पार
बस, मरीज परमहंस !
काया-कल्पाया-सा भला चंगा !

न पेंदी में कुछ उबलेगा
न उबाक ही सकेगा कुछ
रोटी-घास तो क्या
पानी तक न सटक सकेगा कि
भीतर जाते ही
पिटरोल जैसा कुछ भभक पड़े
अजी हिलने-डुलने तक का
अंदेशा खतम, हमेशा-हमेशा के लिए

मुझे मालूम है
दवा देने का कहने से पहले

आपको अपने कलेजे पर
मगमरमर जैसी कोई
सिल बाधनी पड़ेगी,
ऐ समाजवाद की अलादीन !
कितने-कितने चिराग नही घिसे आपने
जितने जिन जगाए
सारे झोक दिए भूख के मोखे मे
भिलाई···दुर्गापुर···बोकारो
भाखरा · सिंदरी···
निवालो पर निवाले ठूसे
तीन-तीन फसलें परोसी
कम पड़ा, 480 मांग लिया
कागज-करासन-जम्बो-टरालिन
सब कुछ तो बटोर लाई आप
क्या दिया बदले मे प्याज···चीनी ही तो
फिर भी आत खाली,

आपके इत्ता किए का
थोडा सूखा-अकाल खा गए
कुछ ताडका बाढ गिट गई
कौन आपने न्यौता भेजा था इन्हे
कुछ गोदामो मे भी तो पडा रहा
पर उस पर बेईमान कीडे जा लगे
डी० डी० टी० छिडक कर बचाया तो इसलिए कि
कतारों मे बटता तो रहे
अब जो कतारो मे
खड़े-खडे ही लेट गए
स्टाक और टेम खतम होने का
हल्ला भी न सुनें-देखे
आप क्या करे भला
हुए तो बीमार ज्यादा खाकर
ले उडे खबरगीर मर-भुक्खों को
जाच-डागधर की रपट सहित
छापमारा अखबारो मे कि

धान से ज्यादा डी डी टी होती है
हिन्दुस्तानी पेट मे
अब इसका जवाब भी आप ही दे
आप हकीम लुकमान तो है नही;

मैं जानता हू, अगमभाखिणी !
आप दूर दराज आंखे फेकती है—
एक तो काबिल वारिस मिल जाए
थमादे जिसके हाथों
इस अड़ियल-मुल्क की रासे
पर मुल्क मे तो दसियो बरसों से
अकाल पड़ा है काबिल लोगो का
दो-चार मा-बाप के कपडे उतार
पहन भी लेते है काबिलियत जैसा कुछ तो
दफ़्तर के नाखून ही फैंच लेते हैं
जूते-चप्पल चटका लेती है
राजधानी की सडके लाज बचाने भी
भागना पडता है, सात समदर पार

पर आप राज से, राज की नीति से
सन्यास लेने के खयाल को तो
पास ही न फटकन दें
यह देश ला-वारिस हो जाएगा
दुनिया क्या कहेगी ?
जिम्मेदारियो से भागना
बुझदिली है मादाम ! फिर आप तो
फरासिसी-बिरतानी-अमरीकी—
अरबी राजभोगों की
पुख्ता जानकार भी तो है
तखत भरी रकाबी का स्वाद
यू थोड़े छोडे जाता है
फिर आप कौन जैन मुनि है जो
त्याग का बरत पर बरत करती रहे,

आप तो आप
मैं मेरा कुनबा तक जानता है
कि अब आप
सिलवाने-सूराखने के सिवा
न तो कुछ कर सकती हैं
और न कुछ करवा ही सकती हैं
मुल्क मे केवल
पचास-साठ घराने ही होते
उनकी बड़ी से बड़ी आत भरे रखती
मगर इस कौडी नगरे की बांबी
भरी रखना बूते बाहर की बात हो गई है,

आपने देख-समझ ही लिया है कि
नारो-हगामो मे आसमान ही हिला है
भीड के भार से सडकें ही धसी है
हिला ही नही आपका राज · आपका तखत ·
जिसकी बुनियाद मे राजा राम
बिकरमादित अशोक···
फिर मुगलिया ईंट · अंग्रेजी चूना
साहू सिरमट के कई-कई पलस्तर
और गाधियो-विनोबाओ
थपाथप थपाई-घुटाई
इतनों-इतनो से जडा
आपका राज और विधान,
आईन ढालती फैंकटरिया
सेंधमारों-उचक्कों से बचाये रखने
चारो खूट घेराव फौज-फाटे का
आप ही कहिए
दो घडी जाग कर ही
लम्बी ताण सो जाया करता
मैं और मेरा कुनबा
एक सून भी टेढा
कर सकता है क्या आपको ?

औलिया हर-हर बम को
चारो खाने चित्त करने वाली
है, काली कलकत्ते वाली !
'जो करै सो भरै' के वेद को सर नवाता
बास बनाता हू—हाथ तुड़वा लेता हू
मुट्ठी मे बांध तिनका भी नही उचका पाता
बारुद पकाता हू, खा लेता हू
परोसना'''न सीखा
न ही किसी ने सिखाया,
मेरे नाम-लेवा भी
मेरी भीड का पुलाव और शोर का
शोरबा ही बना पाए हैं अब तक
गुरिल्ला चिरायता
बनाने के महूरत का
उन्हे भी इन्तजार ही है, खैर'''

आप तो मेरी राजभगति देखिये—
गवाह रहें
किलियोपेतरा-मेरी ट्यूडर
जान आरक की आतमाए !
आम्रपालियों-मीराओं का नामो-करम !
दस्तखत न सही, अंगूठा आपका भी रहे
करोड-करोड
गगुओं-रधिया तेलनियो की
ऐ नूर-ओ-जमाल !
सौगंध है मुझे
फुटपाथ पुरों-झोपड-झुग्गी नगरो की,
आन-फूली आखों बूढी खासियो की,
चूजों की चीखों की
गाठ मे बंधे इरादे की कि'''

मैं'''हा-हां मैं
भू-डोल हो जाने से पहले तक
बने रहना चाहता हूं

केवल सडक और पगडडी
और आपकी पूरी कोतवाली का
गरेबा झझोड पटखनी देने तक
फफूद ही बने रहना जपता हू कि
मेरे और मेरे कुनबे की वजह
न उतरे अम्बूलेंस के पावो की महदी
न ही घिसे मिनसपाल्टी का रथ,

मासा-रत्ती माप से
धान-चून के बोरे-बैरल
खोले रखने वाली हे, करण-कोखा !
हे, शेयरबाजारिये साहू की आत्मा !
बिला लहू-चरबी के ही लडाई माड
आपका तिलिस्म तोड
जीने का हक मुट्ठी मे बाधने का मतर
सीखने से पहले तक
मुझे तो मुझे मेरी सात पुस्तो को भी
आपकी ड्योढी
सास्टाग रगडते रहना हैं, इसलिए
हे, तरणतारिणी वैतरणी मा !
हाजिर है
बेलौस चलवाए
पेट-बद मुंह-बद कराति
सिलवादे सिरे से सिरे तक मुह
सूराखे पेट—आर-पार
दे दें मुझे और मेरे कुनबे को
परमहस होने का वरदान,

यही है मेरी, मेरे कुनबे की
बीमारी का राम बाण इलाज
है न हुजूर !
अच्छा, निमस्कार !

धरती प्रकाशन

से

प्रकाशित

हरीश भादानी

के 'कविता-संग्रह'

- नष्टो मोह्…
- खुले अलाव पकाई घाटी
- सन्नाटे के शिलाखंड पर
- एक अकेला सूरज खेले
- बाथां मे भूगोळ (राजस्थानी)